



लाख की वैज्ञानिक खेती से मिली समृद्धि

उदय कुमार एम.एस., राजवर्धन पाटील, परमानंद साहू,
संजय कुमार पाण्डेय और दिनेश कुमार

झारखण्ड के सिमडेगा जिले के सुमिगबेड़ा गांव के किसान सलेम गुरिया ने यह साबित किया है कि वैज्ञानिक तकनीक, सही मार्गदर्शन और मेहनत के बल पर सीमित संसाधनों में भी खेती को लाभकारी उद्यम में बदला जा सकता है। कभी धान-गेहूं की खेती और मजदूरी से परिवार का भरण-पोषण करने वाले सलेम के पास कुसुम के पेड़ तो थे, लेकिन लाख की वैज्ञानिक खेती की जानकारी न होने के कारण वे इनका पूरा लाभ नहीं उठा पा रहे थे। वैज्ञानिक प्रशिक्षण और तकनीकी मार्गदर्शन मिलने के बाद इन्होंने लाख उत्पादन की उन्नत विधियां अपनाईं और धीरे-धीरे अपनी खेती का विस्तार किया। इससे न केवल लाख का उत्पादन और इनकी आय कई गुना बढ़ी, बल्कि परिवार की आर्थिक स्थिति में भी उल्लेखनीय सुधार आया। आज लाख की खेती ने इनके जीवन को नई दिशा दी है और इनकी सफलता आसपास के किसानों को भी वैज्ञानिक पद्धति से लाख उत्पादन अपनाकर आय बढ़ाने के लिए प्रेरित कर रही है।

सलेम गुरिया की सफलता की यह यात्रा आर्थिक रूप से कमजोर किसान परिवार से आसान नहीं थी। वे एक साधारण एवं आते हैं। इनके पास लगभग 70 कुसुम के

संदर्भ से अवसर की ओर

सलेम गुरिया की यात्रा दर्शाती है कि उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का वैज्ञानिक ढंग से उपयोग, उचित तकनीकी मार्गदर्शन और निरंतर परिश्रम किसान की आजीविका में बड़ा बदलाव ला सकते हैं। भाकृअनुप-राष्ट्रीय कृषि उच्चतर प्रसंस्करण संस्थान, रांची से प्राप्त वैज्ञानिक प्रशिक्षण ने इनकी लाख उत्पादन पद्धति को नई दिशा दी। पारंपरिक विधि से सीमित उत्पादन प्राप्त करने वाले सलेम आज लाख की वैज्ञानिक खेती से बेहतर आय अर्जित करने के साथ स्थानीय लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करवा रहे हैं। इनकी सफलता लाख उत्पादक किसानों के लिए एक उपयोगी उदाहरण है। यह अनुभव बताता है कि वैज्ञानिक लाख उत्पादन को बढ़ावा देकर किसानों की आय बढ़ाने, स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर सृजित करने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में योगदान दिया जा सकता है।

वृक्ष हैं, लेकिन लाख की वैज्ञानिक खेती की जानकारी के अभाव में इन वृक्षों का समुचित उपयोग नहीं हो पा रहा था। परिवार की आजीविका मुख्य रूप से धान एवं गेहूं की खेती पर निर्भर थी। खेती से होने वाली सीमित आय से परिवार का भरण-पोषण करना कठिन था। आर्थिक तंगी के कारण सलेम को खेती के साथ-साथ मजदूरी भी करनी पड़ती थी।

वर्ष 2010 में इन्होंने पहली बार चार कुसुम के वृक्षों पर पारंपरिक विधि से लाख की खेती शुरू की। इससे इन्हें लगभग 75 कि.ग्रा. लाख का उत्पादन प्राप्त हुआ और करीब 25,000 रुपये की आय हुई। यह आय परिवार की आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त नहीं थी। इसलिए लाख की खेती के बावजूद उन्हें मजदूरी पर निर्भर रहना पड़ा और आर्थिक स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हो सका।



लाख उत्पादन बना लाभकारी

वैज्ञानिक प्रशिक्षण से बदलाव

वर्ष 2018 सलेम गुरिया की लाख उत्पादन यात्रा में महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। इनके बड़े भाई शोम गुरिया को भाकृअनुप-राष्ट्रीय कृषि उच्चतर प्रसंस्करण संस्थान, रांची में लाख की वैज्ञानिक खेती का प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिला। प्रशिक्षण के दौरान लाख उत्पादन की उन्नत तकनीकों, खंड प्रणाली, पोषक वृक्षों की काट-छांट, बीज लाख संचारण, कीट एवं रोग प्रबंधन तथा फसल की देखभाल से संबंधित व्यावहारिक जानकारी दी गई।

प्रशिक्षण के बाद दोनों भाइयों ने वैज्ञानिक पद्धति अपनाते हुए 25 कुसुम के वृक्षों पर 100 कि.ग्रा. बीज लाख का संचार किया। वैज्ञानिक तकनीकों के उचित उपयोग, समय पर प्रबंधन और नियमित निगरानी के परिणामस्वरूप इन्हें लगभग 600 कि.ग्रा. लाख का उत्पादन प्राप्त हुआ। इससे परिवार की वार्षिक आय बढ़कर लगभग 3 लाख रुपये हो गई। वर्ष 2010 में लगभग 25,000 रुपये की आय की तुलना में यह उल्लेखनीय वृद्धि थी।

इस सफलता से उत्साहित होकर सलेम ने लाख उत्पादन का लगातार विस्तार किया। वे वैज्ञानिक सलाह के अनुसार लाख की खेती और फसल प्रबंधन करते रहे। वर्ष 2026 तक इन्होंने इस उद्यम को नई ऊंचाइयों तक पहुंचा दिया। इस वर्ष इन्होंने 200 कि.ग्रा. बीज लाख का संचार किया, जिससे लगभग 1,000 कि.ग्रा. लाख का उत्पादन प्राप्त हुआ। बेहतर गुणवत्ता के कारण उपज का बाजार में अच्छा मूल्य भी मिला और इनकी वार्षिक आय लगभग 9 लाख रुपये तक पहुंच गई।



अच्छी गुणवत्ता की लाख उपज

इस प्रकार, वर्ष 2010 में चार कुसुम के पेड़ों से 75 कि.ग्रा. लाख और लगभग 25,000 रुपये की आय से शुरू हुई इनकी यात्रा वर्ष 2026 में 200 कि.ग्रा. बीज लाख के संचार, लगभग 1,000 कि.ग्रा. उत्पादन और करीब 9 लाख रुपये की वार्षिक आय तक पहुंच गई। यह बदलाव वैज्ञानिक प्रशिक्षण, तकनीकी मार्गदर्शन, बेहतर फसल प्रबंधन और सलेम की निरंतर मेहनत का परिणाम है।

रोजगार सृजन

सलेम गुरिया की सफलता केवल इनकी व्यक्तिगत उपलब्धि तक सीमित नहीं रही। लाख उत्पादन के विस्तार के साथ इन्होंने गांव और आसपास के लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी सृजित किए हैं। प्रत्येक उत्पादन चक्र में बीज लाख संचारण के लिए लगभग 5 श्रमिकों को 15 दिनों तक, कीटनाशक एवं फफूंदनाशक के छिड़काव के लिए 3 श्रमिकों को 10 दिनों तक तथा कटाई एवं

संग्रहण के लिए 15 श्रमिकों को 15 दिनों तक रोजगार मिलता है। इस प्रकार स्थानीय लोगों को गांव में ही काम मिलने लगा है और रोजगार के लिए बाहर जाने की उनकी निर्भरता कम हुई है।

लाख की वैज्ञानिक खेती से हुई आय ने सलेम के परिवार की आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव किया है। कभी सीमित आय और मजदूरी पर निर्भर इनका परिवार अब आर्थिक रूप से अधिक सशक्त हुआ है। बेहतर आय से परिवार के जीवन स्तर में सुधार आया है और बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान देना संभव हुआ है। इनकी सफलता से प्रेरित होकर गांव के अन्य किसान भी वैज्ञानिक पद्धति से लाख उत्पादन में रुचि दिखा रहे हैं, जिससे क्षेत्र में लाख की वैज्ञानिक खेती के विस्तार की संभावनाएं बढ़ी हैं।

दैनिक श्रमिक से सफल लाख किसान तक

झारखंड के जेरकी टोली निवासी श्री अमृत लाकड़ा ने मेहनत, वैज्ञानिक प्रशिक्षण और आधुनिक तकनीकों के माध्यम से दैनिक श्रमिक से सफल लाख किसान बनने तक का प्रेरक सफर तय किया। पहले वे दिहाड़ी मजदूरी करके लगभग 10,000 रुपये प्रतिमाह कमाते थे। वर्ष 2022 में इन्होंने कुछ कुसुम और बेर के वृक्षों तथा 15 कि.ग्रा. कुसुम लाख से लाख की खेती शुरू की। पहली ही फसल से उन्हें लगभग 15,000 रुपये की आय प्राप्त हुई।

वर्ष 2023 में उन्होंने अधिक पेड़ लीज पर लेकर और लगभग 6,000 फ्लेमिंगिया

पौधे लगाकर लाख उत्पादन का विस्तार किया। इस कार्य में उन्होंने लगभग 40,000 रुपये का निवेश किया। वन में आग जैसी चुनौतियों के बावजूद इन्होंने लाख की फसल से लगभग 75,000 रुपये की आय



फ्लेमिंगिया सेमियालाटा लाख मेजबान पौधे में कटाई के लिए तैयार लाख

अर्जित की। भाकृअनुप-राष्ट्रीय कृषि उच्चतर प्रसंस्करण संस्थान से मिले प्रशिक्षण और वैज्ञानिक मार्गदर्शन ने इनके उत्पादन कौशल को और बेहतर बनाया। उन्नत उत्पादन तकनीक, कीट प्रबंधन और विपणन संबंधी जानकारी से उनकी उत्पादकता और आय में काफी सुधार हुआ। वर्ष 2025 में इन्होंने लगभग 2.5 क्विंटल लाख का उत्पादन कर 2 रुपये लाख से अधिक की आय अर्जित की। आज श्री अमृत लाकड़ा ग्रामीण उद्यमिता और आत्मनिर्भरता का प्रेरक उदाहरण हैं।

(स्रोत: भाकृअनुप वार्षिक रिपोर्ट 2025-26)